स्त्रियों की आवाज

ISSN 2394-1723
मूल्य : 30 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 352 मार्च–2025

सोशल मीडिया और घृणा की भाषा

प्रियदर्शन वीरेंद्र यादव बोधिसत्व राहुल सिंह
नीतिशा खलखो संजीव चंदन
(प्रस्तुति : आदित्य गिरि)

कहानियाँ

नरेश कौशिक अनुजीत इकबाल
रजनी शर्मा बस्तरिया विनीता शुक्ला
रीता गुप्ता सीमा जाना (बांग्ला) परंद (अफगानी)

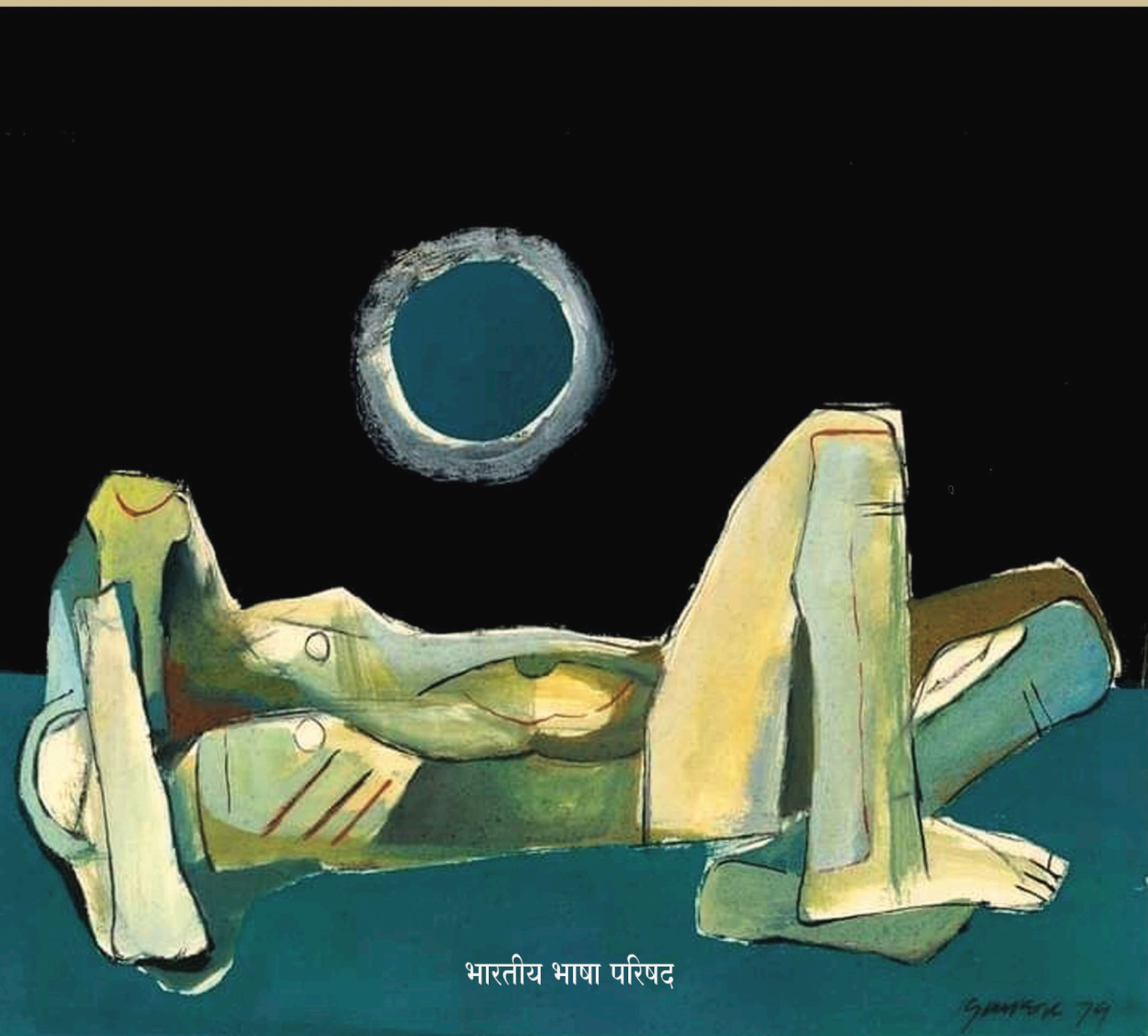

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका
वर्ष 31, अंक 352, मार्च 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

इतिहास में लोकप्रियतावाद : **संपादकीय** 5

कहानियां

मुआवजा : **नरेश कौशिक** 13
शालोम ब्रू : **अनुजीत इकबाल** 19
एक सौ बयासी साल की कैद : **रजनी शर्मा बस्तरिया** 27
रहस्य : **विनीता शुक्ला** 37
सुरमई : **रीता गुप्ता** 43
प्रवासी (बांग्ला कहानी) : **सीमा जाना**
(अनुवाद : **संजय राय**) 50

कविताएं

प्रतिभा चौहान/शांति नायर/रुचि भल्ला/सावित्री बड़ाईक/श्रद्धा सुनील/जया पाठक श्रीनिवासन/गरिमा सक्सेना/ज्योति मिश्रा/पल्लवी शर्मा/उपमा ऋचा/अनुपमा तिवाड़ी/कंचन जायसवाल/कंचन सिंह 55
ओडिया कविता : **एली महंती** (अनुवाद : **राधू मिश्र**) 71

परिचर्चा

सोशल मीडिया और घृणा की भाषा : **प्रियदर्शन/वीरेंद्र यादव/बोधिसत्व/राहुल सिंह/नीतिशा खलखो/संजीव चंदन** (प्रस्तुति : **आदित्य गिरी**) 74

आलेख

अज्ञेय पर एम.एन.राय का प्रभाव : **विजय लक्ष्मी राय** 94
खासी लोक कथाओं में मानवीय मूल्य : **अनिता पंडा** 100

विश्वदृष्टि

बिखरा सपना (अफगानी कहानी) : **परंद** (हिंदी प्रस्तुति : **बालकृष्ण काबरा 'ऐतेश'**) 104

अमेरिकी कविताएं : **डोरोथी लास्की** (हिंदी अनुवाद : **मंजु श्रीवास्तव**) 108

सोशल मीडिया 110

विविध

पाठक संसद/किताबें 113

लघुकथा

कड़वी घूंट : **सारिका भूषण** 36/एंग्री बर्ड : **यशोधरा भटनागर** 42

बतरस

पुरुष-सती (कहानी) : **कुसुम खेमानी** 116

देश-देशांतर

सुकीर्थरानी (तमिल)/**आर.एल.बार्थ** (वियतनाम)

मल्टी मीडिया

कमला दास कविता चित्रपाठ : वाचन : **इतु सिंह**

आवरण चित्रकार : **गुयसामिन**

कविताओं में तीन रेखांकन : **जया पाठक श्रीनिवासन**

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 30/-

वार्षिक सदस्यता : 350 रुपये + 510/- (नई रजिस्टर्ड डाक दर) = 860/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता : 350 रुपये (साधारण डाक व्यय सहित)

तीन साल : 1050 रुपये + 1530/- (नई रजिस्टर्ड डाक दर) = 2580/-

आजीवन : 7500 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**

वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

संपादकीय

इतिहास में लोकप्रियतावाद

मैं जब **विलियम डेलरिंपल** की नई पुस्तक '**द गोल्डन रोड : हाउ एंशियंट इंडिया ट्रांस्फार्म्ड द वर्ल्ड**' पढ़ रहा हूं, मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' (1912) की एक पाद-टिप्पणी याद आ रही है, 'प्राय: सब नए और पुराने इतिहासवेत्ता इस बात को स्वीकार करते हैं कि दर्शन, विज्ञान और सभ्यता-संबंधी सारी बातें यूनान ने भारतवर्ष से ही सीखी हैं और वहां से अथवा इसी प्रकार सारे संसार ने प्राप्त कीं।' ऐसे दावे तब से किए जा रहे हैं, जब से विश्व ने साझा जीवन-साझी संस्कृति के बारे में सोचना छोड़ दिया और उपनिवेशवाद ने एक दूसरे से 'भिन्न सभ्यता', 'उच्च सभ्यता-पिछड़ी सभ्यता' तथा 'सभ्यताओं का टकराव' की धारणाएं दीं। औपनिवेशिक सोच से मान लिया गया कि कुछ सभ्यताएं आगे बढ़ी हुई हैं और कुछ सदा से पिछड़ी हुई हैं।

गोल्डन रोड क्या है

21वीं सदी में सरहदों पर युद्ध से अधिक व्यापारिक युद्ध चल रहा है। इसे सांस्कृतिक ईंधन चाहिए। 'द गोल्डन रोड' ऐसा ही ईंधन है। पिछले दशक से चीन अपने को एशिया के केंद्र में स्थापित करने के लिए 'न्यू सिल्क रोड', अर्थात सिल्क रोड के नए रूप 'वन बेल्ट-वन रोड' पर काम कर रहा है। चीन का यह मार्ग अरब-फारस और हिंदवृत्त (इंडोस्फीयर) के पहाड़ों-पठारों और नदी-घाटियों से होकर था। यह एक तरफ यूरोप तथा दूसरी तरफ दक्षिण एशिया की तरफ जाता था। फाहियान और ह्वेनसांग सिल्क रोड से भारत आए थे। ब्रिटिश लेखक विलियम डेलरिंपल सिल्क रोड के जवाब में 'गोल्डन रोड' खड़ा करते हैं। यह वस्तुतः भारत के प्राचीन व्यापार का समुद्री मार्ग था।

इस मार्ग के प्रमाण हड़प्पा युग के प्राचीन लोथल बंदरगाह से लेकर बौद्ध साहित्य और दक्षिण भारतीय राज्यों के इतिहास में हैं। भारतीय नावें सूती कपड़े, मसाले, हाथी दांत की वस्तुएं और बहुमूल्य रत्न लेकर अरब सागर और लाल सागर से होते हुए यूनान और मिस्र तक जाती थीं। तर्क यह है कि समुद्री यात्रा में बड़ी नावों के लिए मानसून की हवाएं सहायक होती थीं। भारत की व्यापारिक नावें एक तरफ पश्चिमी देशों को छूती थीं, दूसरी तरफ आज के कंबोडिया,